इस्लामी निज़ामे तालीम (शिक्षा की इस्लामी व्यवस्था)

— अध्ययन संग्रह (अनुवाद) —

संकलित एवं अनूदित स्रोत:

इस्लामी निज़ामे तालीम (शिक्षा की इस्लामी व्यवस्था) — मौलाना सैयद अबुल आला मौदूदी

(पाकिस्तान के राष्ट्रीय शिक्षा आयोग के नाम ज्ञापन)

विषय-सूची

भूमिका: निबंध की पृष्ठभूमि

📚 *स्रोत: इस्लामी निज़ामे तालीम (शिक्षा की इस्लामी व्यवस्था) — मौलाना सैयद अबुल आला मौदूदी — पृष्ठ 5*

यह निबंध वास्तव में वह ज्ञापन है जो मौलाना मौदूदी ने शिक्षा-सुधार के सिलसिले में पाकिस्तान के राष्ट्रीय शिक्षा आयोग को भेजा था। चूँकि आयोग द्वारा जारी प्रश्नावली का दायरा इतना सीमित था कि उसकी सीमाओं में रहते हुए बुनियादी परिवर्तनों का कोई प्रस्ताव नहीं दिया जा सकता था, इसलिए यह निबंध आयोग की अनुमति से उससे स्वतंत्र होकर लिखा गया।

देश की मौजूदा शिक्षा-व्यवस्था में सुधार सुझाने से पहले यह ज़रूरी है कि हम उन कमियों को अच्छी तरह समझ लें जो इस समय हमारी शिक्षा-व्यवस्था में पाई जाती हैं। इसके बिना हम यह नहीं जान सकते कि सुधार किस तरह और किस रूप में होना चाहिए। हमारे देश में इस समय दो तरह की शिक्षा-व्यवस्थाएँ प्रचलित हैं: एक वह जिस पर पुराने ढंग के मदरसे चल रहे हैं और जो हमारी धार्मिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उलमा तैयार करती है। दूसरी वह, जो हमारे कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में प्रचलित है और धार्मिक दायरे से बाहर पूरी जीवन-व्यवस्था चलाने के लिए कार्यकर्ता तैयार करती है। इन दोनों की कमियों को ठीक-ठीक समझकर हमें एक ऐसी शिक्षा-व्यवस्था प्रस्तावित करनी होगी, जो हमारी सारी राष्ट्रीय आवश्यकताओं को एक साथ पूरा कर सके और उस मौजूदा शैक्षिक द्वैत को समाप्त कर दे, जो धर्म और सांसारिक जीवन के बीच भेद के भ्रामक विचार पर आधारित है।

अध्याय एक: पुरानी और नई शिक्षा-व्यवस्थाएँ

१. पुरानी शिक्षा-व्यवस्था की वास्तविकता और उसका पतन

📚 *स्रोत: इस्लामी निज़ामे तालीम (शिक्षा की इस्लामी व्यवस्था) — मौलाना सैयद अबुल आला मौदूदी — पृष्ठ 6–8*

हमारी पुरानी शिक्षा-व्यवस्था के बारे में यह आम ग़लतफ़हमी है कि यह हमारी प्राचीन धार्मिक शिक्षा-व्यवस्था थी। यह वास्तव में धार्मिक शिक्षा की व्यवस्था तो थी, पर यह सिविल सेवा की व्यवस्था नहीं थी — यह प्राचीन काल में मुस्लिम सरकारों की ज़रूरतों के लिए बनाई गई थी। इस व्यवस्था की उपयोगिता व्यावहारिक रूप से उसी दिन समाप्त हो गई थी, जिस दिन यहाँ अंग्रेज़ी शासन स्थापित हुआ, क्योंकि इसके तहत शिक्षा पाए लोगों के लिए नई सल्तनत में कोई जगह नहीं रही।

लेकिन चूँकि हमारी सदियों पुरानी सभ्यतागत विरासत मौजूद थी, और हमारी धार्मिक ज़रूरतों को पूरा करने के लिए इसके भीतर भी कुछ सामग्री थी (यद्यपि पर्याप्त नहीं), इसलिए ग़ुलामी के दौर की शुरुआत में हमारी क़ौम के एक बड़े हिस्से ने महसूस किया कि इस व्यवस्था को किसी तरह बनाए रखा जाए, ताकि हमारी विरासत से पूरी तरह कटकर हमारा राष्ट्रीय ताना-बाना बिखर न जाए और हमारा राष्ट्रीय अस्तित्व ही पूरी तरह समाप्त न हो जाए।

यह व्यवस्था अपनी पुरानी हैसियत के बावजूद वास्तव में धर्म का बहुत कम ज्ञान फैलाती है। इसमें उस दौर के दर्शन, तर्कशास्त्र और व्याकरण आदि पर जितना ज़ोर दिया जाता है, क़ुरआन और हदीस तथा धर्म की मूल शिक्षाओं पर उतना ज़ोर नहीं दिया जाता। आज भी कोई अरबी मदरसा ऐसा नहीं, जिसके पाठ्यक्रम में पूरा क़ुरआन शामिल हो — केवल एक-दो सूरतें (सूरा बक़रा या सूरा आल-ए-इमरान) विधिवत पढ़ाई जाती हैं।

इस तरह हमारी शिक्षा-व्यवस्था उन धार्मिक ज़रूरतों के लिए भी बेहद अपर्याप्त है, जिनकी ख़ातिर इसे बचाकर रखा गया था। रहीं सांसारिक ज़रूरतें, तो उनसे इसका जो भी नाता था, वह पिछली सदी की शुरुआत में ही समाप्त हो चुका था।

२. अंग्रेज़ी शिक्षा-व्यवस्था का उद्देश्य और उसके परिणाम

📚 *स्रोत: इस्लामी निज़ामे तालीम (शिक्षा की इस्लामी व्यवस्था) — मौलाना सैयद अबुल आला मौदूदी — पृष्ठ 9–12*

अब उस शिक्षा-व्यवस्था को लीजिए, जो अंग्रेज़ों ने यहाँ स्थापित की। दुनिया में जहाँ भी कोई शिक्षा-व्यवस्था बनाई जाती है, उसमें सबसे पहला बुनियादी सवाल यह होता है कि आप किस तरह का इंसान तैयार करना चाहते हैं, और आपके सामने इंसानियत की वह कौन-सी तस्वीर है, जिसके मुताबिक़ आप लोगों को शिक्षा देकर ढालना चाहते हैं? इस कसौटी पर देखा जाए तो निश्चित रूप से अंग्रेज़ों के सामने वह तस्वीर बिल्कुल नहीं थी, जो मुसलमानों के सामने थी। अंग्रेज़ों ने यह व्यवस्था मुस्लिम सभ्यता को ज़िंदा रखने के लिए नहीं बनाई थी, बल्कि वे अपने देश के लिए ऐसे लोग तैयार करना चाहते थे, जो उनकी भाषा समझें, उनसे जुड़ सकें और उन उसूलों को जानें जिन पर वे देश चलाना चाहते थे।

इस व्यवस्था में जो भी विज्ञान पढ़ाए गए, उनमें इस्लाम की कोई झलक नहीं थी और न हो सकती थी। ख़ुद यूरोप में इन सभी विद्याओं का विकास पूरी तरह उन लोगों के हाथों हुआ, जो ख़ुदा से मुँह मोड़ चुके थे; वहाँ मौजूद धार्मिक तबक़ा पहले ही सोच और अमल के मैदान से बाहर कर दिया गया था। अंग्रेज़ों ने इन विद्याओं को ऐसे ही लोगों से लेकर — जो ख़ुदा के मुनकिर तो नहीं थे मगर अपनी सांसारिक ज़िंदगी में उसकी रहनुमाई की ज़रूरत महसूस नहीं करते थे — उसी अंदाज़ में यहाँ पढ़ाया।

यह शिक्षा ख़ुदापरस्ती और इस्लामी अख़लाक़ से तो ख़ैर ख़ाली है ही, अफ़सोस यह है कि यह हमारे देश के नौजवानों में वे बुनियादी इंसानी अख़लाक़ी गुण भी पैदा नहीं करती, जिनके बिना किसी क़ौम का तरक़्क़ी करना तो दूर, ज़िंदा रहना भी मुश्किल है। इसमें न फ़र्ज़-शिनासी है, न मेहनत, न वक़्त की पाबंदी, न सब्र और साबितक़दमी, न इरादे की मज़बूती, न ज़ब्त-ए-नफ़्स, न अपनी ज़ात से बढ़कर किसी चीज़ के प्रति वफ़ादारी। इनमें कोई राष्ट्रीय चरित्र भी नहीं — कोई ऐसा शायद ही मिले, जो कितनी भी इज़्ज़तदार हैसियत पर हो, फिर भी घटिया बेईमानी करने से न हिचके।

अध्याय दो: एक क्रांतिकारी क़दम की आवश्यकता

१. शिक्षा के उद्देश्य का निर्धारण

📚 *स्रोत: इस्लामी निज़ामे तालीम (शिक्षा की इस्लामी व्यवस्था) — मौलाना सैयद अबुल आला मौदूदी — पृष्ठ 13–14*

इस नई शिक्षा-व्यवस्था के निर्माण में सबसे पहली चीज़, जिसे हमें तय करना है, यह है कि हमारी नज़र में शिक्षा का उद्देश्य क्या है? कुछ लोगों की राय में शिक्षा का मक़सद बस ज्ञान हासिल करना है — कि लोगों को इसलिए शिक्षा दी जाए ताकि वे जीवन की समस्याओं का पूरी तरह वस्तुनिष्ठ अध्ययन (Objective Study) करें और स्वतंत्र निष्कर्ष निकालें। लेकिन ऐसा वस्तुनिष्ठ अध्ययन कैमरे की फ़ोटो की तरह नहीं किया जा सकता। इंसान की आँखों के पीछे एक दिमाग़ भी होता है, जो बहरहाल अपना एक नज़रिया रखता है।

एक पूरी जीवन-प्रणाली विचार की बुनियाद पर खड़ी होती है, जिसे हम संस्कृति कहते हैं। अगर हमारी अपनी संस्कृति है — अगर हम एक ऐसी क़ौम हैं जिसके अपने अक़ीदे हैं, अपना जीवन-दर्शन है, अपना एक लक्ष्य है, और जीवन के कुछ अपने उसूल हैं — तो हमें अपनी नई पीढ़ियों को इस उद्देश्य के लिए तैयार करना होगा कि

वे इस संस्कृति को समझें, उसकी क़द्र करें, उसे ज़िंदा रखें और उसकी मूल बुनियादों पर आगे बढ़ाएँ। दुनिया की हर क़ौम इसी मक़सद के लिए अपनी स्थायी शिक्षा-व्यवस्था क़ायम करती है।

२. धर्म और सांसारिक जीवन के भेद का उन्मूलन

📚 *स्रोत: इस्लामी निज़ामे तालीम (शिक्षा की इस्लामी व्यवस्था) — मौलाना सैयद अबुल आला मौदूदी — पृष्ठ 15–16*

दूसरा उसूल जो ध्यान में रखना है, यह है कि जो पूरी शिक्षा-व्यवस्था हम बनाना चाहते हैं, उसमें धर्म और सांसारिक जीवन के बीच के भेद को समाप्त करना होगा। इन दोनों को अलग करने का यह विचार बौद्ध, ईसाई या हिंदू-योगी विचार है; इस्लाम इसे स्वीकार करने की इजाज़त नहीं देता। हम इससे बड़ी कोई ग़लती नहीं सोच सकते कि अपनी शिक्षा-व्यवस्था, अपने सामाजिक ढाँचे, अपने देश और राज्य में इस विभाजन के विचार को स्वीकार कर लें। हम यह क़तई नहीं मानते कि हमारी शिक्षा का एक हिस्सा सांसारिक हो और दूसरा धार्मिक।

इस्लाम वह धर्म नहीं है, जो आपसे कहे कि सांसारिक मामले जैसे चाहो चलाओ और बस उनके साथ कुछ अक़ीदे और इबादतें जोड़ लो। यह कभी भी ज़िंदगी का महज़ एक परिशिष्ट बनकर संतुष्ट नहीं रहा; यह पूरी ज़िंदगी के लिए आपका रहनुमा और कार्य-पद्धति बनना चाहता है। यह सिर्फ़ किसी परलोक की बातें नहीं करता, बल्कि इस दुनिया की समस्याओं से पूरी तरह जुड़ता है। अगर आपकी पूरी शिक्षा धार्मिक दृष्टिकोण से हो, तो दर्शनशास्त्र भी उसी नज़रिए से पढ़ें, ताकि आप एक मुस्लिम दार्शनिक बन सकें। विज्ञान पढ़ें और एक मुस्लिम वैज्ञानिक बनकर उभरें।

३. चरित्र-निर्माण

📚 *स्रोत: इस्लामी निज़ामे तालीम (शिक्षा की इस्लामी व्यवस्था) — मौलाना सैयद अबुल आला मौदूदी — पृष्ठ 16–19*

तीसरा बुनियादी उसूल यह है कि किताबी ज्ञान से ज़्यादा अहमियत चरित्र-निर्माण को दी जाए। सिर्फ़ किताबें पढ़ाने और हुनर सिखाने से हमारा काम नहीं चलेगा। हमें ज़रूरत है कि हर नौजवान के भीतर एक इस्लामी चरित्र और सोच विकसित हो — चाहे वह वैज्ञानिक बने, सामाजिक विज्ञान का विशेषज्ञ बने, या सिविल सेवा के लिए तैयार हो रहा हो — जो भी बने, उसमें इस्लामी चरित्र ज़रूर होना चाहिए। जिस इंसान में इस्लामी अख़लाक़ नहीं, वह चाहे कुछ भी हो, हमारे किसी काम का नहीं।

यह इस्लामी सोच पहले दिन से पैदा की जानी चाहिए, ताकि यही बुनियाद शिक्षा के अंतिम चरणों तक — यहाँ तक कि जब वह डॉक्टर बने — क़ायम रहे। दूसरा, इस्लाम जो नैतिक विचार और मूल्य पेश करता है, वे हर विषय के हर पाठ में, यहाँ तक कि गणित के सवालों तक में, बच्चों के मन में बिठाए जाएँ। जो चीज़ें नेकी कहलाती हैं, उनके लिए प्रेम और रुचि पैदा की जाए, और जो बुराई मानी जाती है, उसके लिए घृणा बिठाई जाए।

रिश्वतख़ोरी के ख़िलाफ़ तीव्र घृणा जगाई जाए; हराम तरीक़े से कमाने-खाने वालों की कड़ी आलोचना की जाए; और झूठ, धोखे, स्वार्थ, चोरी, जालसाज़ी, बदअहदी, शराब, सूद, जुए, ज़ुल्म और नाइंसाफ़ी के ख़िलाफ़ दिल में गहरी घृणा भरी जाए।

अध्याय तीन: व्यावहारिक ढाँचा

१. प्राथमिक शिक्षा

📚 *स्रोत: इस्लामी निज़ामे तालीम (शिक्षा की इस्लामी व्यवस्था) — मौलाना सैयद अबुल आला मौदूदी — पृष्ठ 17–20*

सबसे पहले प्राथमिक शिक्षा को लीजिए — यह वह बुनियाद है, जिस पर शिक्षा की पूरी इमारत खड़ी होती है। इसके हर विषय में चार बातें पिरोई जानी चाहिए। पहली, बच्चे के मन में हर पहलू से यह बात बिठाई जाए कि यह दुनिया ख़ुदा की सल्तनत और उसकी क़ुदरत का करिश्मा है; कि हम यहाँ ख़ुदा के ख़लीफ़ा की हैसियत से नियुक्त हैं; कि यहाँ जो कुछ भी है, वह ख़ुदा की अमानत है, जो हमें सौंपी गई है, और जिसके बारे में हम उसके सामने जवाबदेह हैं। हम चाहते हैं कि जिस दिन से बच्चा प्राइमरी स्कूल में दाख़िल हो, आख़िरी चरण तक, हर पाठ में ये विचार समाए हों — यहाँ तक कि जब वह अक्षर सीखे, तो उन्हें ख़ाली अक्षरों की तरह नहीं, बल्कि 'अल्लाह' से शुरू करके सीखे।

दूसरी बात, इस्लाम जो नैतिक विचार पेश करता है, वे पाठों के ज़रिए ही बच्चों के मन में बिठाए जाएँ। तीसरी, ईमान की बुनियादी बातें प्राथमिक स्तर पर ही मज़बूती से बच्चों के मन में बिठा दी जाएँ। चौथी, बच्चों को इस्लामी ज़िंदगी जीने का तरीक़ा और वे धार्मिक विधान सिखाए जाएँ, जो दस-बारह साल के बच्चे को मालूम होने चाहिए: पवित्रता और सफ़ाई के नियम, वुज़ू, नमाज़ और रोज़े का तरीक़ा, हराम और हलाल, तथा सामाजिक जीवन के पसंदीदा तौर-तरीक़े।

२. माध्यमिक शिक्षा

📚 *स्रोत: इस्लामी निज़ामे तालीम (शिक्षा की इस्लामी व्यवस्था) — मौलाना सैयद अबुल आला मौदूदी — पृष्ठ 20–22*

अब हाई स्कूल की शिक्षा को लीजिए। इसमें सबसे पहली और सबसे ज़रूरी बात यह है कि अरबी भाषा को अनिवार्य विषय के रूप में पढ़ाया जाए। इस्लाम का समूचा मूल स्रोत अरबी में है — क़ुरआन, हदीस, और शुरुआती दौर का लगभग सारा फ़िक़्ही व इल्मी काम, साथ ही इस्लामी इतिहास के मूल स्रोत भी अरबी में हैं। कोई व्यक्ति इस्लाम की रूह को तब तक ठीक से नहीं समझ सकता, जब तक वह क़ुरआन को सीधे उसकी अपनी भाषा में न पढ़े।

दूसरा अनिवार्य विषय क़ुरआन होना चाहिए, जिसे हर मैट्रिक पास विद्यार्थी अच्छी तरह समझकर पढ़ चुका हो। तीसरा विषय इस्लामी अक़ीदे होने चाहिए — सिर्फ़ ईमानियात का विवरण नहीं, बल्कि उनके तर्क भी, कि इंसान को इनकी क्या ज़रूरत है, और व्यावहारिक जीवन से इनका क्या संबंध है।

चौथी बात, हमारे हाई स्कूल के विद्यार्थी — जिन्हें आज भी इंग्लैंड का इतिहास पढ़ाया जा रहा है — उन्हें न केवल अपने देश का इतिहास, बल्कि इस्लामी इतिहास से भी परिचित कराया जाए, जिसमें पैग़म्बरों का इतिहास भी शामिल हो, ताकि वे जान सकें कि इस्लाम एक शाश्वत, सतत आंदोलन है, न कि सातवीं सदी ईस्वी में अचानक शुरू हुई कोई चीज़।

३. उच्च शिक्षा

📚 *स्रोत: इस्लामी निज़ामे तालीम (शिक्षा की इस्लामी व्यवस्था) — मौलाना सैयद अबुल आला मौदूदी — पृष्ठ 23–26*

उच्च शिक्षा के स्तर पर हम चाहते हैं कि सभी विद्यार्थियों के लिए, चाहे वे किसी भी विषय के हों, इस्लामी शिक्षा का एक सामान्य पाठ्यक्रम हो, साथ ही हर विषय के लिए उससे संबंधित एक विशेष पाठ्यक्रम भी हो।

सामान्य पाठ्यक्रम में तीन चीज़ें शामिल होनी चाहिए: (1) क़ुरआन, इस तरह पढ़ाया जाए कि विद्यार्थी उसकी शिक्षाओं को अच्छी तरह समझें और उनकी अरबी इतनी विकसित हो जाए कि वे इसे बिना अनुवाद के समझ सकें; (2) हदीस का एक संक्षिप्त संग्रह, जो इस्लाम के बुनियादी सिद्धांतों, नैतिक शिक्षाओं और पैग़म्बर ﷺ के चरित्र पर रोशनी डाले; (3) इस्लामी जीवन-व्यवस्था का एक व्यापक रूपरेखा — अक़ीदे, इबादत, सामाजिक जीवन, नैतिकता, सभ्यता, अर्थव्यवस्था, राजनीति और युद्ध-शांति के मामलों तक — जिसे स्पष्ट और तर्कसंगत ढंग से समझाया जाए।

विशेष पाठ्यक्रम में हर विषय के लिए उससे जुड़े इस्लामी विचारों और पृष्ठभूमि को पेश किया जाए। जैसे, दर्शनशास्त्र के विद्यार्थियों को अन्य प्रणालियों के साथ इस्लामी दर्शन भी पढ़ाया जाए — लेकिन इसका मतलब सिर्फ़ वह दर्शन नहीं, जो मुसलमानों ने अरस्तू, अफ़लातून या प्लोतीनस से लिया, न ही वह इल्म-ए-कलाम, जिसे बाद के धर्मशास्त्रियों ने यूनानी तर्कशास्त्र के प्रभाव में तैयार किया, बल्कि क़ुरआन की रोशनी में दर्शन के बुनियादी सवालों के नए सिरे से गढ़े गए इस्लामी जवाब। इसी तरह इतिहास के विद्यार्थियों को विश्व इतिहास के साथ इस्लामी इतिहास और अन्य दर्शनों के साथ इस्लाम का अपना इतिहास-दर्शन भी पढ़ाया जाए।

४. विशिष्ट शिक्षा

📚 *स्रोत: इस्लामी निज़ामे तालीम (शिक्षा की इस्लामी व्यवस्था) — मौलाना सैयद अबुल आला मौदूदी — पृष्ठ 26–28*

उच्च शिक्षा के बाद विशिष्ट शिक्षा आती है, जिसका मक़सद किसी एक क्षेत्र में उत्कृष्टता पैदा करना है। जिस तरह अन्य कलाओं और विज्ञानों के लिए विशिष्ट शिक्षा की व्यवस्था की जाती है, उसी तरह क़ुरआन, हदीस और अन्य इस्लामी विद्याओं की विशिष्ट शिक्षा का भी बंदोबस्त होना चाहिए, ताकि हमारे देश में उच्च स्तर के मुफ़स्सिर, मुहद्दिस, फ़क़ीह और उलमा पैदा हो सकें।

इस उद्देश्य से कुछ मानक उच्च संस्थान स्थापित किए जाने चाहिए, जिनमें अलग-अलग विभाग हों, जिनमें केवल स्नातक या स्नातक-पूर्व विद्यार्थी प्रवेश पा सकें, और जहाँ ये विषय पढ़ाए जाएँ: (1) अरबी साहित्य, ताकि विद्यार्थी उच्च स्तरीय पुस्तकें पढ़ने-समझने की क्षमता पाएँ और अरबी बोल-लिख भी सकें; (2) क़ुरआन के विज्ञान — तफ़सीर के सिद्धांत और इतिहास, विभिन्न विचारधाराओं की विशेषताएँ, फिर क़ुरआन का गहन अध्ययन; (3) हदीस के विज्ञान — सिद्धांत, इतिहास, और जर्ह-व-तादील (आलोचना व सत्यापन) का विज्ञान, फिर मूल संकलनों का अध्ययन ताकि विद्यार्थी स्वयं हदीसों को परखने में सक्षम हों; (4) फ़िक़्ह (न्यायशास्त्र) — इसके सिद्धांत, इतिहास, विभिन्न मसलकों की विशेषताएँ, और क़ुरआन-हदीस से नियम निकालने के तरीक़े; (5) इल्म-ए-अक़ाइद (धर्मशास्त्र) और उसका इतिहास, ताकि विद्यार्थियों को मुस्लिम धर्मशास्त्रियों के पूरे काम की समग्र समझ मिले; (6) तुलनात्मक धर्म-अध्ययन, जिसमें दुनिया के प्रमुख धर्मों की शिक्षाओं, विशेषताओं और इतिहास को शामिल किया जाए।

अध्याय चार: आवश्यक उपाय और संबंधित मुद्दे

१. कार्यान्वयन के लिए आवश्यक उपाय

📚 *स्रोत: इस्लामी निज़ामे तालीम (शिक्षा की इस्लामी व्यवस्था) — मौलाना सैयद अबुल आला मौदूदी — पृष्ठ 29–30*

मेरी नज़र में यह उस शिक्षा-व्यवस्था की रूपरेखा है, जो मौजूदा धार्मिक और सांसारिक, दोनों व्यवस्थाओं के स्थान पर स्थापित होनी चाहिए। लेकिन सुधार की सारी कोशिश तब तक बेकार रहेगी, जब तक उपर्युक्त सुधारों के साथ-साथ निम्नलिखित क़दम भी न उठाए जाएँ।

सबसे पहली आवश्यकता यह है कि हम शिक्षा-नीति की बागडोर ऐसे लोगों के हाथों में सौंपें, जो इस्लामी दृष्टिकोण रखते हों, इस्लामी शिक्षा-व्यवस्था को समझते हों, और उसे स्थापित करना चाहते हों। यह काम केवल ऐसे ही लोग कर सकते हैं — न कि वे लोग, जो न इस्लाम को जानते हैं, न उसकी शिक्षा-व्यवस्था स्थापित करने की कोई इच्छा रखते हैं।

यह भी उतना ही ज़रूरी है कि हम अपने स्कूलों और कॉलेजों के लिए अध्यापकों के चयन में उनके चरित्र, नैतिकता और धार्मिक स्थिति को उनकी शैक्षणिक योग्यता के बराबर — बल्कि उससे भी अधिक — महत्व दें, और तदनुसार अध्यापक-प्रशिक्षण में सुधार करें। भ्रष्ट अक़ीदे और भ्रष्ट चरित्र वाले अध्यापक विद्यार्थियों को वह नैतिक और मानसिक प्रशिक्षण कभी नहीं दे सकते, जो हमारी नई व्यवस्था में अपेक्षित है।

२. महिलाओं की शिक्षा

📚 *स्रोत: इस्लामी निज़ामे तालीम (शिक्षा की इस्लामी व्यवस्था) — मौलाना सैयद अबुल आला मौदूदी — पृष्ठ 31–32*

जहाँ तक महिलाओं की शिक्षा का सवाल है, यह पुरुषों की शिक्षा जितनी ही ज़रूरी है। कोई भी क़ौम अपनी महिलाओं को अनपढ़ और पिछड़ा रखकर दुनिया में आगे नहीं बढ़ सकती। हमें महिलाओं की शिक्षा के लिए भी उतने ही अच्छे इंतज़ाम करने होंगे, जितने पुरुषों के लिए किए जाते हैं।

हमें यह समझना चाहिए कि हमारी सभ्यता पश्चिमी सभ्यता से बुनियादी तौर पर अलग है। पश्चिमी सभ्यता किसी महिला को तब तक कोई अधिकार या सम्मान नहीं देती, जब तक वह पुरुषों की ज़िम्मेदारियाँ उठाने के लिए तैयार न हो जाए। इसके विपरीत, हमारी सभ्यता महिला को उसकी स्वाभाविक ज़िम्मेदारी — घर चलाने और इंसान गढ़ने — को निभाने के आधार पर ही उसके सभी अधिकार देती है, और उस पर केवल वही ज़िम्मेदारियाँ डालती है, जो प्रकृति ने ख़ुद उसे सौंपी हैं।

३. लिपि का मसला

📚 *स्रोत: इस्लामी निज़ामे तालीम (शिक्षा की इस्लामी व्यवस्था) — मौलाना सैयद अबुल आला मौदूदी — पृष्ठ 33–35*

हमारे देश में यह अजीब स्थिति है कि एक ओर बार-बार राष्ट्रीय एकता की ज़रूरत बताई जाती है, और दूसरी ओर सुलझे हुए मसलों को नए सिरे से विवादास्पद बनाने में कोई संकोच नहीं किया जाता। इसी क़िस्म का यह हालिया विवाद है, जो उर्दू और बांग्ला के लिए रोमन लिपि अपनाने के सिलसिले में छेड़ा गया है।

जहाँ तक उर्दू का सवाल है, उसकी लिपि को अरबी से बदलना अपने आप में विशेष रूप से आपत्तिजनक नहीं होगा; नई टाइपफेस विकसित की जा सकती हैं, जिनसे पाठक धीरे-धीरे परिचित हो जाएँ। लेकिन रोमन लिपि अपनाना — भले ही यह हमारी फ़ौज और उन लोगों को स्वीकार्य हो, जिन्हें अंग्रेज़ी शासन पहले ही इससे परिचित करा चुका है — पूरी क़ौम के लिए कई मायनों में एक अत्यंत नुक़सानदेह क़दम है, जिसके परिणाम बहुत दूरगामी होंगे।

इसका पहला नतीजा यह होगा कि हमारा पूरा उर्दू साहित्यिक भंडार नई पीढ़ियों के लिए बेकार हो जाएगा: या तो हमें भारी धन और समय ख़र्च करके पूर्वजों की पूरी विरासत रोमन लिपि में दोबारा छपवानी होगी, या हमारी नई पीढ़ियाँ अपने अतीत से पूरी तरह बेगानी होकर बड़ी होंगी, जिनकी न कोई परंपरा होगी, न कोई सभ्यता, न कोई गर्व करने लायक़ चीज़।

इसका दूसरा, और भी बड़ा नुक़सान यह होगा कि हमारी वैज्ञानिक व शैक्षणिक प्रगति की रफ़्तार एकाएक रुक जाएगी, और लिपि-परिवर्तन की उठापटक में हमारा बहुत सा समय बर्बाद हो जाएगा। पीढ़ियाँ धीरे-धीरे ही किसी लिपि से परिचित होती हैं; पूरी क़ौम को अचानक एक नई लिपि का आदी बना देना आसानी से संभव नहीं।

४. अंग्रेज़ी भाषा का स्थान

📚 *स्रोत: इस्लामी निज़ामे तालीम (शिक्षा की इस्लामी व्यवस्था) — मौलाना सैयद अबुल आला मौदूदी — पृष्ठ 36*

जहाँ तक अंग्रेज़ी भाषा की शिक्षा का सवाल है, कोई भी निष्पक्ष व्यक्ति इसकी आवश्यकता और महत्व से इनकार नहीं कर सकता। लेकिन यह न केवल ग़लत है, बल्कि यह बेहद नुक़सानदेह भी है कि यह हमारे यहाँ शिक्षा के माध्यम के रूप में बनी रहे।

अंग्रेज़ी को निश्चित रूप से एक महत्वपूर्ण भाषा के तौर पर पाठ्यक्रम में शामिल किया जाना चाहिए, लेकिन इसे शिक्षा का माध्यम बनाए रखना एक गंभीर ग़लती है। हमारी नई पीढ़ियों को उच्च कलाओं और विज्ञानों तक अपनी ही भाषा में पहुँच मिले, तभी हमारे यहाँ मज़बूत चरित्र, वास्तविक आत्म-सम्मान और अपनी राष्ट्रीय सभ्यता पर गर्व करने वाले लोग पैदा हो सकते हैं।

सार-संक्षेप

मौदूदी का मूल तर्क यह है कि पाकिस्तान को विरासत में मिली दोनों शिक्षा-व्यवस्थाएँ — पुरानी धार्मिक मदरसा-व्यवस्था और अंग्रेज़ों की स्थापित की गई धर्मनिरपेक्ष व्यवस्था — अपने-अपने ढंग से अपर्याप्त और एक स्वतंत्र मुस्लिम राष्ट्र के लिए अनुपयुक्त हैं। किसी एक को सुधारने के बजाय, वे दोनों को हटाकर एक नई व्यवस्था बनाने का आह्वान करते हैं, जो तीन सिद्धांतों पर आधारित हो: (1) एक स्पष्ट उद्देश्य — ऐसे व्यक्तियों को तैयार करना, जो अपनी राष्ट्रीय सभ्यता और धर्म से सच्चा लगाव रखते हों; (2) धर्म और सांसारिक जीवन के भेद को पूरी तरह समाप्त करना, ताकि हर विषय इस्लामी दृष्टिकोण से पढ़ाया जाए; (3) किताबी ज्ञान के बराबर चरित्र-निर्माण को अहमियत देना। इसी बुनियाद पर वे प्राथमिक, माध्यमिक, उच्च और विशिष्ट शिक्षा के लिए विस्तृत योजना पेश करते हैं, और अंत में कार्यान्वयन के लिए आवश्यक व्यावहारिक शर्तों, महिलाओं की शिक्षा, लिपि विवाद और अंग्रेज़ी के स्थान पर अपने विचार रखते हैं।

संदर्भ सूची

इस्लामी निज़ामे तालीम (शिक्षा की इस्लामी व्यवस्था) — मौलाना सैयद अबुल आला मौदूदी, पृष्ठ 5–36. मूल रूप से पाकिस्तान के राष्ट्रीय शिक्षा आयोग के नाम ज्ञापन के रूप में लिखा गया। यह दस्तावेज़ उसी निबंध का अनूदित संकलन है।